



स्तनपान टिकाऊ विकास की कुन्जी



दुनिया भर की सरकारों ने 2010 के लिए टिकाऊ विकास के 17 लक्ष्य (Sustainable Development goals (SDGs) तय किये हैं। इस वर्ष का विश्व स्तनपान सप्ताह इन्हीं लक्ष्यों पर प्रकाश डालता है।



टिकाऊ विकास लक्ष्य सहस्रत्राष्टि विकास लक्ष्य (Millenium Development Goal) के बाद बनाये गये। ये लक्ष्य पर्यावरण, अर्थव्यवस्था तथा समानता के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर तय किये गये हैं। ये लक्ष्य गरीबी के मूल कारणों को दूर करने की कोशिश है। साथ ही सभी लोगों के विकास के लिए रास्ता दिखाता है। विश्व स्तनपान सप्ताह 2016 एकजुट होकर कार्य करने को प्रेरित करता है तथा यह सिखाता है कि किस प्रकार स्तनपान का संरक्षण, समर्थन एवं संवर्धन करने से इन लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

विश्व स्तनपान सप्ताह के लक्ष्य:-

- 1 लोगो के टिकाऊ विकास लक्ष्यों की जानकारी देना (SDGs)। साथ ही यह भी बताना है कि स्तनपान एवं शिशु आहार (IYCF) को बेहतर करके कैसे इन लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।
- 2 स्तनपान का संरक्षण, सहयोग तथा सम्वर्धन करने के लिए ज्यादा लोगो से सहयोग लिया जाय।
- 3 स्तनपान एवं शिशु आहार (IYCF) को बढ़ावा देने के लिए हरेक स्तर पर नये तरीके ढूँढें जाय।



पृष्ठभूमि (Background)

लैन्सेट पत्रिका ने 2016 में स्तनपान से स्वास्थ्य एवं अर्थ व्यवस्था को होने वाले फायदों पर नये सबूत दिये हैं। स्तनपान बच्चों, स्त्रियों एवं समाज को अल्पावधि तथा दीर्घावधि (Short & long term) में स्वास्थ्य संबंधी आर्थिक एवं वातावरण सम्बंधी फायदे पहुँचाता है।

लैन्सेट यह दिखाती है कि 2030 में टिकाऊ विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में स्तनपान का संरक्षण, समर्थन एवं संवर्धन कितना जरूरी है? आइये इसे विस्तार से देखें:-

1- पहला लक्ष्य है 'गरीबी न हो'। स्तनपान शिशुओं एवं छोटे बच्चों को आहार देने का प्राकृतिक तरीका है और इसके लिए एक पैसा खर्च नहीं करना पड़ता है। अतः गरीबी मिटाने का यह बहुत अच्छा तरीका है।

2- दूसरा लक्ष्य है 'कोई भूखा न रहे'। छः माह तक केवल स्तनपान और उसके बाद दो साल या उससे ज्यादा समय तक स्तनपान कराने से तथा पूरक आहार देने से कोई बच्चा भूखा नहीं रहेगा और उसे पर्याप्त ऊर्जा तथा पोषण मिलेगा।

3- तीसरा लक्ष्य है 'अच्छा स्वास्थ्य और बेहतर महसूस करना' (Good health and well being)।

स्तनपान शिशुओं और छोटे बच्चों के स्वास्थ्य, विकास और

जिन्दा रहने की गारंटी देता है। यह माताओं को भी स्वस्थ रखता है और ज्यादा खुशी देता है।

4- चौथा लक्ष्य है 'अच्छी शिक्षा' स्तनपान और सम्पूरक आहार बच्चों के मानसिक एवं बुद्धि सम्बंधी विकास (Mental and cognitive development) को बेहतर बनाता है।

5- आठवां लक्ष्य 'अच्छा रोजगार एवं आर्थिक विकास'।

स्तनपान कराने वाली माता को कार्य स्थल पर सहयोग देकर और छः माह का सवैतनिक अवकाश देने से यह लक्ष्य प्राप्त हो सकता है। इससे स्तनपान के साथ साथ रोजगार भी जारी रखा जा सकता है।

6- दसवां लक्ष्य है 'असमानताएँ कम करना'। गरीबों और अमीरों के बीच अन्तर को कम करने के लिए स्तनपान बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सर्व सुलभ है।

7- तेरहवां लक्ष्य है वातावरण सम्बंधी कार्य। स्तनपान प्राकृतिक आपदाओं के समय, जो कि वातावरण के गर्म होने से हो रही है, शिशुओं के स्वास्थ्य की रक्षा करता है।

स्तनपान और टिकाऊ विकास लक्ष्य

जिन्दा रहना, स्वास्थ्य और बेहतर महसूस करना

लैन्सेट पत्रिका के अनुसार स्तनपान 820,000 बच्चों का जीवन पूरी दुनिया में प्रतिवर्ष बचा सकता है। इसका अर्थ है, पांच साल के नीचे के बच्चों के मृत्यु दर में 13 प्रतिशत की कमी। स्तनपान श्वास सम्बंधी बीमारियों (न्यूमोनिया) को एक तिहाई तथा दस्त की बीमारी को आधा कम कर देता है। यह फायदा गरीब तथा विकासशील देशों में देखने को मिलता है। भारतवर्ष में इसमें प्रतिवर्ष 1,56,000 बच्चों की मृत्यु रोकੀ जा सकती है। 34,36,560 श्वास सम्बंधी बीमारी 39,00,000 दस्त के प्रकरण रोके जा सकते हैं।

लैन्सेट कहती है कि जो बच्चे स्तनपान लम्बे समय तक करते हैं उनकी बुद्धि ज्यादा तेज होती है, उनके मुकाबले जो कम समय तक स्तनपान करते हैं। यह अन्तर 3 प्रतिशत तक हो सकता है, चाहे वह बच्चा गरीब हो या अमीर हो। इससे हिन्दुस्तान अपने सकल राष्ट्रीय आय (Gross National Income) में 4300 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी प्रतिवर्ष कर सकता है, क्योंकि बुद्धिमान, बेहतर कमाई कर सकते हैं।

स्तनपान से मां के स्वास्थ्य को भी फायदा मिलता है क्योंकि, उससे स्तन एवं अण्डाशय के कैंसर होने का खतरा कम हो जाता है। पूरी दुनिया में इससे स्तन कैंसर से होने वाली मृत्यु में 20,000 में कमी की जा सकती है। भारत वर्ष में इससे 4915 माताओं की मृत्यु बच जाएगी। हमारे देश में हर साल 70,000 मातायें स्तन कैंसर से मर जाती हैं, और स्तनपान



उसमें 7 प्रतिशत की कमी कर देगा। इससे टिकाऊ विकास का तीसरा लक्ष्य यानी अच्छा स्वास्थ्य और बेहतर महसूस करने में मदद मिलेगी।

पोषण, भोजन, सुरक्षा और गरीबी घटाना



स्तनपान से बच्चे को लम्बे समय तक स्वास्थ्य और पोषण सम्बंधी फायदे होते हैं। स्तनपान एक ऐसा पोषण है जिसके लिए कोई खर्च नहीं लगता और यह गरीबी हटाने में मदद करता है।

लैन्सेट कहती है कि स्तनपान से टाइप-2 डायबीटीज में 35 प्रतिशत की कमी की जा सकती है। हिन्दुस्तान में प्रतिवर्ष 9500000 ऐसे नये मधुमेह के मरीज जुड़ जाते हैं। अगर सभी लोग स्तनपान कराएँ तो इसमें 3300000 की कमी की जा सकती है। स्तनपान से मोटापा भी 26 प्रतिशत कम हो जाता है। इससे हिन्दुस्तान में मोटे लोगों की संख्या में 1/4 की कमी हो जाएगी। भारत वर्ष में इस समय 5-17 वर्ष के आयु वर्ग में 20 प्रतिशत बच्चे मोटापे से ग्रस्त हैं।

डिब्बाबन्द दूध बनाने वाली कम्पनियों का जोरदार प्रचार स्तनपान को बढ़ावा देने में बहुत बड़ा बाधक है। गरीब एवं विकासशील देशों में पूर्ण स्तनपान न होने से 70 अरब डालर का नुकसान होता है, जबकि विकसित देशों में 230 अरब डालर का। अगर सभी लोग स्तनपान कराने लगे तो गरीबी और भूखमरी दोनों कम होगी और बेहतर शिक्षा तो मिलेगी ही।

वातावरण और उसमें होने वाले परिवर्तन

स्तनपान से कोई कचरा नहीं पैदा होता है और वातावरण शुद्ध रहता है। यह एक नवीनीकृत होने वाला भोजन है, जिसे बनाने तथा

बच्चे तक पहुँचाने में कोई प्रदूषण नहीं होता है और किसी पैकेजिंग सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है। डिब्बा बन्द दूध को बनाने में उर्जा लगती है, बच्चे तक पहुँचाने के लिये पैकेजिंग सामग्री (टिन/गत्ता) लगती है तथा परिवहन में तेल जलता है। इसे तैयार करने में तथा पिलाने में अन्य संसाधन भी लगते हैं। भारतवर्ष में कुल बिकने वाले दूध से 1.11.226 टन ग्रीन हाउस गैसों (GHG) का उत्सर्जन होता है जबकि चीन में 22,49,247 टन का यानि 20 गुना ज्यादा। यानि चीन हमसे 20 गुना ज्यादा वातावरण को गर्म करता है क्योंकि वहाँ 5-6 माह के बच्चों में स्तनपान का प्रतिशत 13.6 प्रतिशत है जबकि हमारे यहाँ 57 प्रतिशत है।



प्राकृतिक आपदाओं में भी स्तनपान बच्चे के स्वास्थ्य के बचाव का सर्वोत्तम तरीका है वातावरण में होने वाले परिवर्तनों को कम करने में स्तनपान की महत्वपूर्ण भूमिका है।

स्तनपान की नीतियों, कार्यक्रमों और कार्य प्रणाली में भारत कहाँ खड़ा है?

NFHS-4 (नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-4) के आकड़े जो देश के 17 राज्यों से लिए गये हैं, वो बताते हैं कि हिन्दुस्तान का प्रदर्शन औसत है। मुख्य संकेतक हैं,

1. एक घण्टे में स्तनपान की शुरुआत 50.5 प्रतिशत
2. अस्पतालों में होने वाली डिलेवरी 84.3 प्रतिशत
3. छः माह तक केवल स्तनपान (Exclusive breastfeeding) 57 प्रतिशत
4. संपूरक आहार 49.6 प्रतिशत

यह जानकारी होने पर भी कि स्तनपान से स्वास्थ्य और आर्थिक फायदे हैं, हमारे यहाँ सिर्फ आधे बच्चों को पैदा हाने के एक घण्टे के अन्दर स्तनपान शुरू कराया जाता है। छः माह तक केवल स्तनपान सिर्फ 57 प्रतिशत में जारी रहता है। यह आकड़ा पिछले दो दशकों से करीब-करीब स्थिर था परन्तु पिछले राष्ट्रीय



सर्वेक्षण में इसमें बढ़ोतरी देखी गई है।

World Breastfeeding Trends initiative (WBTi) के आकड़ों के अनुसार 2015 में भारत अधिकतर मानकों पर बहुत पीछे था। वास्तविक जीवन में माताओं को स्तनपान कराने के रास्ते में अनेक बाधाएँ आती हैं। उन्हे स्वास्थ्य कर्मियों से सही जानकारी नहीं प्राप्त होती, सही वक्त पर घर के अन्दर कोई सहारा नहीं मिलता, प्रशिक्षित स्तनपान काउन्सलर उपलब्ध नहीं हैं, कम्पनियों का धुआँधार प्रचार और डिलेवरी के कुछ दिनों बाद काम पर जबरदस्ती वापस भेज देना। ये बाधाएँ छः माह तक केवल स्तनपान कराने के रास्ते में रुकावट बन जाती हैं और दो साल तक स्तनपान जारी रखना मुश्किल हो जाता है जैसा की विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिफारिश है। माताओं को सहारे की जरूरत है ताकि वो लम्बे समय तक स्तनपान करा सके। अगर टिकाऊ विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना है तो स्तनपान के कार्यक्रमों को उससे जोड़ना होगा।

स्तनपान और टिकाऊ विकास लक्ष्य, शोध से मिलने वाले सबूत

Infant feeding, poverty and human development. Beasley A and Amir AH. Int Breastfeeding J 2007, 2:14. इस जर्नल की संपादकीय नीति है कि स्तनपान को बढ़ावा दे करके स्वास्थ्य की रक्षा की जाए। अगर छः तक केवल स्तनपान और बारह माह तक स्तनपान के साथ सम्पूरक आहार दिया जाए तो पाँच साल तक के 13 प्रतिशत या 13,01,000 बच्चों की मृत्यु रोकी जा सकती है। ऐसा लोग कहते हैं कि

विकासशील देशों में गरीबी से स्तनपान में बढ़ावा मिलता है परन्तु ऐसा नहीं है। वास्तव में गरीबी से स्तनपान को खतरा पैदा होता है। डिब्बा बन्द दुध के निर्माता अपना धुआँधार प्रचार जारी रखे हुए हैं और इनसे कामकाजी महिलाओं के स्तनपान के अधिकार को बचाए रखने की जरूरत है। अतः इस बात की तुरन्त आवश्यकता है कि International Code of Breastmilk Substitutes और उसके बाद के विश्व स्वास्थ्य सभा के प्रस्तावों को लागू किया जाए। अगर दुनिया में शिशु स्वास्थ्य एवं विकास में होने वाली असमानताओं को घटाना है, लड़कियों को भोजन और शिक्षा में जो असमानता झेलनी पड़ती है उसे कम करना है, तो इसके लिए हमें उचित कदम उठाने होंगे। महिलाओं का शारीरिक और मानसिक विकास बेहतर हो जाए तो उनके बच्चों का भी विकास बेहतर होगा।

Breastfeeding and breast cancer risk in India: A multicenter case-control study. Gajalakshmi V et al. Int J Cancer 2009, 125:662-665. स्तन कैंसर की संख्या विकसित देशों के मुकाबले हिन्दुस्तान में कम है। पिछले कुछ दशकों से शहरी औरतों में इसकी बढ़ोतरी देखी गई है। इस बढ़ोतरी के सही कारण का पता नहीं है परन्तु इसका संबंध बदलती हुई जीवन शैली और प्रजनन संबंधी व्यवहार से है। एक अध्ययन में स्तनपान और स्तन कैंसर के खतरे के संबंध को दिखाया गया है। यह अध्ययन दक्षिण भारत के दो शहरों में 2002 से 2005 के बीच किया गया है। इसमें 1866 केसेस और 1873 कंट्रोल थे। दक्षिण भारत के इन शहरों में लम्बे समय तक स्तनपान कराने की परम्परा रही है। निष्कर्ष में पाया गया कि रजो निवृत्ति के पहले स्तन कैंसर का खतरा कम हो जाता है, यदि लम्बे समय तक स्तनपान कराया गया हो। स्वास्थ्य कार्यक्रमों में यदि स्तनपान को बढ़ावा दिया जाए तो स्तन कैंसर का खतरा कम हो सकता है।

Breastfeeding reduces breast cancer risk: A case-control study in North India. Babita et al. Int J Prev Med 2014, 5:791-795. सारी दुनिया में स्तन कैंसर महिलाओं को होने वाला प्रमुख कैंसर है। भारतवर्ष तथा अन्य विकासशील देशों में महिलाओं में सबसे अधिक सवाईकल कैंसर होता है। इसके बाद स्तन कैंसर का नंबर आता है। स्तनपान और स्तन कैंसर में क्या सम्बन्ध है, यह जानने के लिये दुनिया में बहुत सारे शोध किये गये हैं। हिन्दुस्तान में ऐसे बहुत कम शोध हुए हैं, जो स्तनपान का फायदा दर्शाते हैं। PGIMS, रोहतक हरियाणा में अगस्त 2009 से जुलाई 2010 तक इस तरह का एक अध्ययन किया गया। स्तन कैंसर के 128 नये मरीजों को लिया गया और इतनी संख्या में कंट्रोल भी लिए गए। स्तन कैंसर के मरीजों की उम्र 25 से 78 साल थी जबकि कंट्रोल मरीजों की उम्र 24 से 79 साल थी। मरीजों की जाति, शादी के समय उम्र, प्रथम गर्भावस्था के समय उम्र, जिंदा बच्चों की संख्या और सारे जीवन में कितने समय तक दूध पिलाया, इसका स्तन कैंसर से महत्वपूर्ण रिश्ता पाया गया। स्तनपान से स्तन कैंसर का खतरा कम हो सकता है। अतः इस बारे में लोगों को जानकारी देने की और शिक्षित करने की जरूरत है। यह इस जानलेवा बिमारी को रोकने के लिये समय की मांग है।

Theory and social practice of agency in combining breastfeeding and employment: A qualitative study among health workers in New Delhi, India. Omer-Salim A et al. Women and Birth 2014, 27:298-306. औरतों की संस्थाएँ या अंतरराष्ट्रीय कार्य जो स्तनपान और रोजगार को जोड़ती हैं, वो स्वास्थ्य और श्रमिकों की उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण हैं। भारत में हुए पिछले अनुसंधानों में यह दिखा है कि माताएँ स्तनपान के साथ-साथ रोजगार को जारी रखने के लिए विभिन्न तरह के तरीके अपनाती हैं। इसका ठीक से अध्ययन करने के लिए, दस महिलाओं का जो सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं, नई दिल्ली में कार्यरत थी, उनका साक्षात्कार लिया गया। साक्षात्कार से चार तरह के



तरीके समझ में आये—

1. कुछ महिलाओं ने कहा, सब मेरी क्षमता के अन्दर था।
2. अपेक्षा से कठिन, लेकिन ठीक रहा।
3. यह बहुत ही अकेलेपन से भरा कार्य था।

4. मेरे नियन्त्रण के बाहर था।

परिवार के सदस्यों की स्तनपान और रोजगार को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका है।

Negotiating the tensions of having to attach and detach concurrently: A qualitative study on combining breastfeeding and employment in public education and health sectors in New Delhi, India. Omer-Salim A et al. Midwifery 2015, 31:473-481.

इस शोध का उद्देश्य था स्तनपान और रोजगार से जुड़े हुये कारणों का अध्ययन करना उन औरतों में जिन्हें छः माह का मातृत्व अवकाश मिला है। इस अध्ययन में 20 माताएँ जो पहली बार माँ बनी थी और जिनके बच्चे की उम्र 8-12 माह थी, का साक्षात्कार लिया गया। ये सभी महिलाएँ स्वास्थ्य और शिक्षा विभाग, नई दिल्ली में काम करती हैं। इस अध्ययन से एक माडल का पता चला कि किस तरह से नौकरी करने

वाली महिला अपने शिशु से, काम से तथा परिवार से एक ही समय जुड़ती रहती हैं और छोड़ती रहती हैं और उस तनाव को झेलती हैं। विभिन्न समस्याओं से जुड़ते हुये वह घर पर शिशु के लिये पोषण और विश्वसनीय देखभाल की व्यवस्था करती हैं, कार्य स्थल की समस्याओं को झेलती हैं और परिवारिक जिम्मेदारियों को भी उठाती हैं। छः माह के अच्छे मातृत्व अवकाश के बावजूद इन महिलाओं को बहुत सारी परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है जो स्तनपान और रोजगार में रूकावट और मदद दोनों करते हैं। गर्भावस्था के समय और डिलेवरी के बाद भी माताओं को जानकारी और ऐसे सहारे की जरूरत है जिससे वो परिवार और कार्यस्थल की समस्याओं से निपट सकें। यह मदद सवैतनिक मातृत्व अवकाश के अलावा होनी चाहिए।

Report on Carbon Footprints Due to Milk Formula: A study from selected countries of the Asia-Pacific region. JP Dadhich, Julie Smith, Alessandro Iellamo, Adlina Suleiman. BPNI/IBFAN Asia 2015.

स्तनपान एक ऐसा तरीका है जिसमें कोई कार्बनिक गैसों का उत्सर्जन नहीं होता क्योंकि एक स्वस्थ माँ अपनी जमा वसा का इस्तेमाल करती है, उसके लिए अतिरिक्त भोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती है। अतः स्तनपान से धरती पर कचरा हटाये जाने का बोझ नहीं पड़ता है। इसके विपरीत डिब्बे का दूध बनाने में यातायात और इस्तेमाल के लिये हर कदम से ग्रीन हाउस गैसों निकलती हैं। इससे कचरा भी पैदा होता है, जिसके निस्तारण करने से वातावरण को और भी नुकसान पहुँचता है। यह अध्ययन एशिया और प्रशान्त क्षेत्र के छः देशों में किया गया है। यह बताता है कि डिब्बे का दूध ग्रीन हाउस गैसों के निकलने का प्रमुख कारण है। यह देखा जा रहा है कि इनकी बिक्री बढ़ती जा रही है और ग्रीन हाउस गैसों भी ज्यादा निकल रही है।

References

1. Transforming our world : the 2030 Agenda for Sustainable Development. WHA resolution 70/1. 2015?
2. Breastfeeding in the 21st century: epidemiology, mechanisms, and lifelong effect. <http://www.thelancet.com/series/breastfeeding>, Vol 387 January 30, 2016, 475-490
3. Why invest, and what it will take to improve breastfeeding practices? <http://www.thelancet.com/series/breastfeeding>, Vol 387 January 30, 2016, 491-504
4. Victora CG, Horta BL, de Mola CL et al. Association between breastfeeding and intelligence, educational attainment, and income at 30 years of age: a prospective birth cohort study from Brazil. *Lancet* 2015, 3: e199-e205.
5. Breast Cancer India. Statistics of breast cancer in India global comparison. Available at: http://www.breastcancerindia.net/statistics/stat_global.html Accessed on 16th February, 2016
6. Diapedia. The burden of diabetes in India. Available at: <http://www.diapedia.org/introduction-to-diabetes-mellitus/1105045828/the-burden-of-diabetes-in-india#fn:3> Accessed on 15 February, 2016
7. OECD (2014). Obesity Update. Available at: <http://www.oecd.org/health/Obesity-Update-2014.pdf> Accessed on 15 February, 2016
8. Report on Carbon Footprints Due to Milk Formula: A study from selected countries of the Asia-Pacific region. BPNI/IBFAN Asia 2015. <http://www.bpni.org/report/Carbon-Footprints-Due-to-Milk-Formula.pdf>
9. NFHS 4 2015-16. National Family Health Survey, Ministry of Health & Family Welfare, Government of India. http://rchiips.org/nfhs/factsheet_nfhs-4.shtml
10. WBTi 2015-Arrested Development. 4th Assessment of Indias Policy and programmes on infant and young child feeding. <http://www.bpni.org/report/WBTi-India-Report-2015.pdf>
11. WHO/UNICEF 2003. Global Strategy for Infant and young child feeding. <http://apps.who.int/iris/bitstream/10665/42590/1/9241562218.pdf?ua=1>

What is BPNI

BPNI is a registered, independent, non-profit, national organisation that works towards protecting, promoting and supporting breastfeeding and appropriate complementary feeding of infants and young children. BPNI works through advocacy, social mobilization, information sharing, education, research, training and monitoring the company compliance with the IMS Act. BPNI is the Regional Focal Point for South Asia for the World Alliance for Breastfeeding Action (WABA) and Regional Coordinating Office for International Baby Food Action Network (IBFAN) Asia.

BPNI's Ethical Policy

BPNI follows clear ethical and funding policies that do not lead to any conflicts of interest. BPNI does not accept funds or sponsorship of any kind from the companies producing infant milk substitutes, feeding bottles, related equipment, or infant foods (cereal foods) or from those who have been ever found to violate the IMS Act or the International Code of Marketing of Breastmilk Substitutes.

Acknowledgements

This action folder has been produced by the Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI)/ International Baby Food Action Network (IBFAN)-Asia with the Support of the Swedish International Development Cooperation Agency (Sida). This document has been developed using material from the WABAs World Breastfeeding Week 2016 Action Folder.

Compiled by: Dr. Shoba Suri, Vibharika Chandola and Nupur Bidla

Reviewed by: Dr Arun Gupta and Dr JP Dadhich

Designed by: Amit Dahiya

हिन्दी रूपान्तर : डा. बी.बी. गुप्ता, डा. के.पी. कुशवाहा, गोरखपुर

सहयोग : प्रवीण दूबे, मेडिकल कालेज, गोरखपुर



Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI)

Asia Regional Coordinating Office for IBFAN
South Asia Regional Focal Point for WABA

Address: BP-33, Pitampura, Delhi 110 034. Tel: +91-11-27343608, 42683059.
Tel/Fax: +91-11-27343606. Email: bpni@bpni.org. Website: www.bpni.org

Your local contact here